Vol 6 Issue 6 Dec 2016

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | December - 2016

''पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन''

डॉ. पूनम शर्मा[1] , प्रो. उषा धुलिया[2]
[1]प्राचार्या, सनराइज एकेडमी मैनेजमेन्ट सोसायटी, (बी०एड० कॉलेज) रायपुर रोड़, देहरादून (उत्तराखण्ड).
[2]डीन एवं संकायाध्यक्ष, स्कूल ऑफ एजूकेशन, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय (उत्तराखण्ड).

प्रस्तावना

''भारत सहित सारे विश्व के कष्टों का कारण यह है कि शिक्षा केवल मस्तिष्क के विकास तक ही सीमित हो गयी है, इससे नैतिक एवं अध्यात्मिक विकास की प्राप्ति नहीं होती।''
– डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन

शिक्षा व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों को उजागर करती है, उसके देवत्व का दर्शन कराती है, मानवीय मूल्यों की अनुभूति का उसे अवसर प्रदान करती है और स्वानुभूति का मार्ग प्रशस्त करती है। परन्तु इस कार्य को करने में वर्तमान शिक्षा–प्रणाली की असफलता जगजाहिर है। स्वतन्त्रता के पश्चात् जिस तीव्रता से उपाधिधारकों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई उसी तीव्रता से गुणवत्ता में ह्रास भी परिलक्षित हो रहा है। आधुनिक काल में बालकों की व्यक्तिगत भिन्नता शिक्षा का केन्द्र बिन्दु मानी जाने लगी है। व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर शिक्षा की व्यवस्था करके ही बालकों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है।
बालकों के लिए विद्यालय में अनेकों पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। इनमें भाग लेने से बालक का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है। आधुनिक काल में शिक्षाशास्त्री इस बात पर एकमत हैं कि यदि पाठ्य सहगामी क्रियाओं को समुचित रूप से प्रदर्शित किया जाए तो यह बड़े ही शैक्षिक महत्व की सिद्ध होगी। आज पाठ्य सहगामी क्रियाओं को पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग माना जाने लगा है। इनके

अत्यधिक महत्व के कारण ही इन क्रियाओं पर अनेक अनुसंधान कार्य हुए हैं, जिसके अन्तर्गत, ''सामाजिक आर्थिक स्थिति का पाठ्य सहगामी क्रियाओं पर प्रभाव'', ''शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने के मध्य सम्बन्ध', 'अनुशासन स्थापित करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की भूमिका' आदि है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन बहुत ही कम हुए हैं, अतः प्रस्तुत शोध में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के शैक्षिक सन्तुष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

अनुसंधान का शीर्षक

प्रस्तुत अनुसंधान का शीर्षक ''पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन'' है।

अनुसंधान के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकर्ती ने निम्न उद्देश्य निर्धारित किए हैं –
1.विद्यार्थियों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभागिता का अध्ययन करना।
2.विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
3.पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत अनुसंधान में शोधकर्ती द्वारा निम्न निराकरणीय परिकल्पना का निर्माण किया गया है– ''पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अनुसंधान की समस्या के समाधान हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श

समय व साधन को दृष्टिगत रखते हुए संपूर्ण समष्टि का प्रतिनिधित्व करने वाले देहरादून शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की एकादश कक्षा के 500 छात्र तथा छात्राओं को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में पाठ्य सहगामी क्रियाओं में विद्यार्थियों की प्रतिभागिता एवं शैक्षिक सन्तुष्टि को ज्ञात करने हेतु निम्न उपकरण प्रयुक्त किए गए –
1. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभागिता सूची – शोधकर्ती द्वारा निर्मित
2. छात्र शैक्षिक संतोष मापनी (SASS)–श्रीमती अलका गुप्ता
अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियां
प्रस्तुत शोधकार्य में अप्राचलीय परीक्षण (Non-parametric test) का प्रयोग किया गया है। शोधकार्य में शोधकर्ती द्वारा मान विह्टने U परीक्षण हेतु निम्न सूत्रों का प्रयोग किया गया–

$$U = n_1 n_2 + n_1 \ (n_1 + 1)/2 \ - R_1 \ldots\ldots(1)$$

$$U' = n_1 n_2 + n_2 \ (n_2 + 1)/2 \ - R_2 \ldots\ldots(2)$$

$$\text{मध्यमान}U \ (M \ U) = \frac{n_1 n_2}{2} \ldots\ldots(3)$$

$$\text{प्रमाणिक विचलन}(\sigma \ U) = \sqrt{\frac{[n_1 n_2 \ (n_1 + n_2 + 1)]}{12}} \ldots\ldots(4)$$

$$\text{प्रमापांक}(Z) = \frac{U - MU}{\sigma U} \ldots\ldots(5)$$

$$\text{जहाँ}, U = n_1 n_2 - U' \ldots\ldots(6)$$

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधकार्य का पहला उद्देश्य पाठ्य सहगामी क्रियाओं में विद्यार्थियों की प्रतिभागिता का अध्ययन करना है। प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात यह बात स्पष्ट हुई कि अधिकांश विद्यार्थी पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में रूचि लेते हैं परन्तु 57६ विद्यार्थी ही इन क्रियाओं में भाग लेते हैं। अधिकांश विद्यार्थी घरेलु सहायक क्रियाओं जैसे – सिलाई, बागवानी, खाना बनाने आदि में रूचि रखते हैं। अधिकतर विद्यार्थी समाचार पत्र नियमित रूप से पढ़ते हैं परन्तु कम ही विद्यार्थी पत्र–पत्रिकाओं में लेखन कार्य करते हैं। विद्यालय की प्रतियोगिता में कम ही विद्यार्थी भाग लेते हैं। अधिकतर विद्यार्थियों के अभिभावक एवं शिक्षक–शिक्षिकाएं उन्हें इन क्रियाओं में भाग लेने के लिए उत्साहित करते हैं। बहुत ही कम शिक्षक इन क्रियाओं को बोझ समझते हैं। इसका कारण सम्भवतः यह हो सकता है कि या तो विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन में उन्हें आर्थिक या शारीरिक परेशानी हो, विद्यार्थियों के माता–पिता से प्रोत्साहन न मिलता हो तथा शिक्षण कार्य में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के लिए समय ही न मिलता हो।

प्रस्तुत शोधकार्य का दूसरा उद्देश्य विद्यार्थियों कीशैक्षिक सन्तुष्टि का अध्ययन करना था।इसके लिए छात्र शैक्षिक संतोष मापनी पर प्राप्त आंकड़ों का अध्ययन किया गया। 429 विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त मापनियों में से 401 विद्यार्थियों की मापनी ही वैध एवं पूर्ण रूप से भरी पायी गयी। इस मापनी पर प्राप्त अंकों के आधार पर विद्यार्थियों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया।

सारणी संख्या–1

छात्र शैक्षिक संतोष मापनी के आधार पर छात्रों का शैक्षिक संतुष्टि स्तर

छात्र शैक्षिक संतोष मापनी पर प्राप्त अंक	शैक्षिक सन्तुष्टि स्तर	छात्रों की संख्या
98 से 145 तक	निम्न शैक्षिक संतुष्टि स्तर	184
146 से 193 तक	मध्यम शैक्षिक संतुष्टि स्तर	172
194 से 242 तक	उच्च शैक्षिक संतुष्टि स्तर	45

सारणी सं. 1 से स्पष्ट है कि बहुत ही कम संख्या उच्च शैक्षिक संतुष्टि स्तर के अन्तर्गत आने वाले विद्यार्थियों की है, वहीं निम्न शैक्षिक स्तर वाले विद्यार्थियों की संख्या सर्वाधिक एवं मध्यम शैक्षिक संतुष्टि स्तर के विद्यार्थियों की संख्या उससे कुछ कम पाई गयी। अतः इससे स्पष्ट होता है कि अधिकतर विद्यार्थियों का शैक्षिक संतुष्टि स्तर निम्न श्रेणी का है। अर्थात् उच्च सन्तुष्टि प्राप्त कम ही विद्यार्थी हैं जो विद्यालयी वातावरण में अत्यन्त आनन्द का अनुभव करते हैं। पाठ्यक्रम में रूचि लेते हैं, ये विद्यालय में उपलब्ध साधन, खेल, पुस्तकालय, पाठ्य सहगामी क्रियायें तथा परीक्षा प्रणाली से पूर्णतः सन्तुष्ट हैं। अध्यापकों के प्रति सम्मान, सहपाठियों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार आदि में भी ये सन्तुष्ट पाए गए। अधिकतर विद्यार्थी शैक्षिक सन्तुष्टि के सभी 9 आयामों पर सामान्य सन्तुष्टि को प्रदर्शित करते हैं। सबसे अधिक संख्या उन विद्यार्थियों की है जो शैक्षिक सन्तुष्टि के 9 आयामों में से किसी न किसी आयाम में निम्न सन्तुष्टि प्रदर्शित करते हैं। वे या तो विद्यालय में समस्या उत्पन्न करते हैं या स्वयं तनाव की स्थिति में आ जाते हैं, इसका कारण विद्यालय के वातावरण का उनके अनुकूल न होना, शिक्षण विधि का रूचिकर न होना, पाठ्यक्रम दोषपूर्ण होना, परीक्षा प्रणाली दोषपूर्ण होना, शिक्षकों का खराब व्यवहार, पुस्तकालय की खराब स्थिति या अन्य कुछ भी हो सकता है।

तीसरे उद्देश्य के अन्तर्गत पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।सारणी संख्या 2 में आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकला कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर है। अतः निराकरणीय परिकल्पना अस्वीकृत की गयी।

सारणी संख्या–2
पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियो की शैक्षिक सन्तुष्टि के सन्दर्भ में सार्थकता के अन्तर का अध्ययन

क्र. सं.	समूह	संख्या	अनुस्थितियों का योग	U	Z	p स्तर	0.05 सार्थकता स्तर पर
1.	भाग लेने वाले विद्यार्थी	229	48590.50	17132.50	2.229	0.026	सार्थक
2.	भाग न लेने वाले विद्यार्थी	172	32010.50				

दोनों समूहों के मध्य शैक्षिक सन्तुष्टि में भिन्नता का कारण यह हो सकता है कि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने के कारण अनेक ऐसे गुणों का विकास होता है जो विद्यार्थी में प्रत्येक परिस्थिति में समायोजित होने की क्षमता विकसित करते हैं और विद्यार्थी सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं। ऐसे विद्यार्थी प्रत्येक परिस्थिति, वातावरण, मित्र, शिक्षक, पाठ्यक्रम, पुस्तकालय, खेल के मैदान, परीक्षा प्रणाली, शिक्षण विधि, पाठ्य सहगामी क्रियायें एवं शैक्षिक प्रशासन आदि के विषय में सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं एवं प्रत्येक स्तर पर सन्तुष्ट रहते हैं।

वहीं दूसरी ओर पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग ने लेने वाले विद्यार्थी विद्यालय में किसी न किसी स्तर पर असन्तुष्ट पाये गये, चाहे वो पाठ्यक्रम, परीक्षा, समय सारणी अथवास साथी–समूह या कुछ अन्य हो। इस कारण वह स्वयं भी तनाव में रहते हैं और केवल भार स्वरूप शिक्षा को ग्रहण करते हैं, उन्हें विद्यालय का वातावरण नीरस लगता है एवं वह भी विद्यालय के लिए समस्या उत्पन्न करते हैं।

शोधकर्ता द्वारा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक सन्तुष्टि के मध्य सार्थकता के अन्तर का अध्ययन भी किया गया।

सारणी संख्या–3
पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक सन्तुष्टि के सन्दर्भ में सार्थकता के अन्तर का अध्ययन

क्र. सं.	समूह	संख्या	अनुस्थितियों का योग	U	Z	p स्तर	0.05 सार्थकता स्तर पर
1.	छात्र	76	9810.50	4743.5	2.268	0.023	सार्थक
2.	छात्रायें	153	16524.50				

उपरोक्त सारणी संख्या 3 के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले छात्र तथा छात्राओं के मध्य शैक्षिक सन्तुष्टि के स्तर पर सार्थक अन्तर है।

शैक्षिक निहितार्थ

इस अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर एक महत्वपूर्ण तथ्य यह उभर कर सामने आया कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों में शैक्षिक सन्तुष्टि उच्च स्तर की पायी गयी। इस निष्कर्ष से शिक्षकों को, प्रबन्धकों को एवं सरकार के उच्च अधिकारियों को यह संकेत स्पष्ट रूप से मिलता है कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं को विद्यालय में आयोजित करने के प्रति उन्हें और उत्साहित होना चाहिए क्योंकि यदि विद्यार्थी, जो समाज एवं राष्ट्र के निर्माता हैं, संतुष्ट होंगे तो विद्यालय में अनुशासनहीनता की समस्या उत्पन्न नहीं होगी। असंतुष्टि ही तनाव, कुंठा, अनुशासनहीनता एवं उद्दण्डता को जन्म देती है। जब व्यक्ति असन्तुष्ट होता है तो या तो वह स्वयं में तनाव में रहता है या दूसरों को कष्ट पहुंचाता है। उसके इस कृत्य से समाज, राष्ट्र एवं स्वयं उसकी प्रगति में व्यवधान उत्पन्न होता है और सारा समय उसकी समस्या को दूर करने में व्यर्थ हो जाता है। इन क्रियाओं में प्रतिभागिता द्वारा बालकों की शैक्षिक सन्तुष्टि स्तर को बढ़ाया जा सकता है। अतः निष्कर्ष के आधार पर पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभागिता प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक होनी चाहिए तभी राष्ट्र का प्रत्येक फूल एक फलदार वृक्ष के रूप में परिणीत हो सकेगा।

सन्दर्भ सूची

1.अस्थाना, एस. (1977) ''द इम्पोर्टेन्स ऑफ कोकरिकुलर एक्टीविटीज इन क्लास–टीचिंग,'' पी.एच.डी., एजूकेशन, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी।
2.उपाध्याय, एस.एन. (1987), ''स्टूडेन्ट्स परसैप्शन ऑफ द कॉलेज इन्वायरमैन्ट इज रिलेटेड टू देयर सैटिशफैक्शन इन द कॉलेज ऑफ हरियाणा'', रविशंकर यूनिवर्सिटी, फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, पेज 980।
3.कृष्णया, जी.के. (1981) ''ए प्लेस ऑफ एक्स्ट्राकरिकुलर एक्टीविटीज'', द जनरल ऑफ टीचर, वाल्यूम XVIII जून, 1981।
4.गुप्ता, अलका (1991), ''ए स्टडी ऑफ स्टूडेन्ट्स एकेडमिक सैटिस्फैक्शन इज़ रिलेटेड टू देयर पर्सनैलिटी नीड्स एण्ड पर्सनल वैल्यू'', पी.एच.डी., एजूकेशन, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी।
5.बुच, एम.वी. (1988–1992) फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, वॉल्यूम फर्स्ट एण्ड सैकण्ड, एन.सी.ई.आर.टी.।
6.कौल, लोकेश (1973), ''मैथडोलॉजी ऑफ एजूकेशनल रिसर्च'', विकास पब्लिशिंग हाउस प्राईवेट लिमिटेड, न्यू देहली।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org